ऋणनिर्देश

Acknowledgement

इस शोधप्रबंध को लिखने के लिए बहुत से लोगों ने मेरी सहायता की है। सबसे पहले तो में अपनी माताजी श्रीमती सुनिता दाभाडे जी को वंदन करता हूँ । जिन्होंने हर समय मुझे प्रेरित किया। अत्यंत कठिन परिस्थितियों में भी उन्होंने मुझे पढाया, लिखाया, मेरी सभी जरूरतों का खयाल रखा। मुझे हर बार रियाज के लिए प्रेरित किया और इस शोधप्रबंध को पूरा करने में मेरी प्रेरणा बनकर खडी रही। उसी तरह मेरे प्रिय मामाजी उत्तम साळी, राजू साळी का भी मैं बहुत आभारी हूँ। जिन्होंने मेरी अच्छी परवरिश तथा मुझे एक काबिल इंन्सान बनाया। इस शोधग्रंथ को लिखने के लिए विभिन्न घरानों के विद्वान तबला वादकों से साक्षात्कार एवं तथ्य प्राप्त हुए जिनमें पं. अरविंद मुळगांवकर, पं.सुधीर माईणकर, पं. सुशिलकुमार जैन, पं. विभव नागेशकर, पं. कालीनाथ मिश्रा, पं. अरूण जोशी, पं. आनंद बदामीकर, प्रो. डॉ. अजय अष्टपुत्रे, पं. अमोद दंडगे, प्रो. डॉ. गौरांग भावसार, डॉ. केदार मुकादम इनसे व्यक्तिगत वार्तालाप से प्राप्त इनके विचारों ने मुझे उपकृत कर दिया। इन विद्वानों के साथ चर्चा करके इनके बहुमूल्य विचारों को जानने से मुझे बहुत कुछ सिखने को मिला। मैं इन सभी गुणीजनों का अत्यंत आभारी हूँ और इन्हें हार्दिक धन्यवाद देता हूँ।

गुरू के स्नेह, सहयोग, प्रेरणा, मार्गदर्शन तथा आशीर्वाद से जिस ज्ञान की प्राप्ति की जाए वही पूर्ण ज्ञान है। इस शोधप्रबंध की प्रस्तुति के लिए मैं अपने गुरूओं के प्रति नतमस्तक हूँ, जिनकी प्रेरणा, प्रोत्साहन, मार्गदर्शन ने मुझे इस शोधकार्य के लिए प्रेरित किया। मेरे प्रथम गुरू पं. मुकेश श्रीखंडे तथा पं. अमोद दंडगे इन्होंने केवल मुझे अपना शिष्य न समझकर अपने पुत्र कि तरह प्यार दिया और तबले की शिक्षा दी तथा इस शोधग्रंथ को लिखने के काबिल बनाया। एक अच्छा तबला वादक होने के साथ ही एक अच्छा ईन्सान बनाने की कोशिश कर जीवन के हर मोड पर सही राह दिखाई। मेरे मार्गदर्शक डॉ. अजय अष्टपुत्रे जी

इनका में विशेष रूप से आभारी हूँ तथा स्वयं को भाग्यशाली समझता हूँ, क्योंकि इनके कारण भारत के अत्यंत लोकप्रिय महाराज सयाजीराव विश्वविद्यालय के तबला विभाग में मुझे शोधार्थी बनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। डॉ. अजय अष्टपुत्रे जी ने मेरे शोधग्रंथ के विषय का चयन करने के साथ ही पंजीकरण से लेकर इस शोधग्रंथ को सफलतापूर्वक पूरा करने में बहुत बडा सहयोग दिया। गुरू पं. अमोद दंडगे, डॉ. अजय अष्टपुत्रे इन्होंने इस शोधग्रंथ को लिखते समय जो भी सवाल मेरे मन में निर्माण हुए उनका बहुत अच्छी तरह से समय–समय पर समाधान किया। इन्होंने न केवल शोधकार्य में निर्देशन दिया जब की अपने महत्वपूर्ण सुझाव, गहन ज्ञान, तथा अनुभव द्वारा भी मेरा मार्गदर्शन किया, जिसके बिना यह शोधकार्य असंभव था। इनके साथ चर्चा करते समय तबले की बहुतसी अनमोल चीजे सीखने को मिली। मैं अपने आपको बहुत खुश नसीब समझता हूँ कि, यह विद्वान तबला वादक मुझे गुरू एवं मार्गदर्शक के रूप में प्राप्त हुए। उसी तरह इस शोधप्रबंध को पूरा करने हेतू मुझे संगीत विभाग के डीन डॉ. राजेश केलकर सर और तबला विभाग के अध्यक्ष डॉ. गौरांग भावसार सर इन दो व्यक्ति विशेषों का विशेष रूप से आभारी हूँ। जिन्होंने मझे शोधप्रबंध को लिखने का सुअवसर प्रदान किया। इसी के साथ लायब्ररी स्टाफ का भी में मनःरूपूर्वक आभार मानता हूँ और संगीत विभाग के सभी गुरूजनों का भी में अत्यंत आभारी हूँ जिन्होंने मेरा समय–समय पर, मुझे प्रोत्साहित किया और मेरे शोधप्रबंध को पुरा करने में अमूल्य सहयोग किया।

इस शोधग्रंथ को लिखने के लिए सबसे जटिल प्रकार इसका टंक लेखन करना था जो मेरे मित्र डॉ. दिनकर कबीर इन्होंने निपुणता पूर्वक पूरा करके उसे उचित ढंग से श्रेणीबद्ध किया। मेरे मित्र श्री. सागर कांबळे, डॉ. सचिन कचोटे जी ने इस शोधग्रंथ को मुर्द्रितशोधन का अत्यंत मुश्किल काम सरल कर के मेरी सहायता की इन सबका भी मैं बहुत आभारी हूँ। मेरे प्रिय मित्र डॉ. आनंद धर्माधिकारी, डॉ. सचिन कचोटे, डॉ. अतुल कांबळे जिन्होंने लगातार मुझे इस शोधप्रबंध को पुरा करने हेतु प्रोत्साहन प्रदान किया। इनके साथ विभिन्न विषयों पर चर्चा से मुझे इस शोधग्रंथ को लिखने में बहुत मदद मिली। में कृतज्ञ हूँ अपनी धर्मपत्नी सौ. अश्विनी दाभाडे के प्रति जिनके स्नेह, उत्साहवर्धन तथा पूर्ण सहयोग ने मेरी शोधकार्य की पूर्णता में एक अभिप्रेरक की भूमिका का निर्वाहन किया। मेरे इस शोध के पूरे कार्य

काल में मेरे पुत्ररत्न चि. मयंक ने छोटी छोटी लेकिन महत्वपूर्ण मदद करते हुए हमेशा मेरा उत्साह दुगुना बढाया।

इस शोधग्रंथ को लिखना सभी की सहायता के बिना एक असंभव काम था। अपने शुभचिन्तकों, अनेक विद्वत्तजनों, इष्ट मित्रों द्वारा विभिन्न रूप में प्राप्त सहयोग इस शोधग्रंथ को लिखने में उपयोगी सिद्ध हुआ। अन्त में कै. श्री. गुरूनाथ पाटकर इनकी चरणोंमें मैं अपना संपूर्ण शोधकार्य समर्पित करता हूँ जिनके अशीर्वाद से मुझे तबले की कला की प्राप्ति हुई एवं मेरे जीवन को एक नई दिशा मिली। सभी लोगों का नाम लेना मुमकिन नही है, लेकिन परोक्ष–अपरोक्ष रूप से कई विद्वानों, संगीत संस्थानों से, उनकी कृतियों की प्राप्ति से इस शोध प्रबंध को लिखने में सहायता हुई उन सभी का में तहेदिल से बहुत–बहुत आभारी हूँ और हार्दिक धन्यवाद देता हूँ। तथा भूलवश इस शोधग्रंथ में किसी भी प्रकार की कमी रह गई हो तो क्षमा याचना विनम्र भाव से करता हूँ।

दिपक दाभाडे
(शोधार्थी)